

निगमनात्मक अनुमान - निगमनात्मक अनुमान वह है जिसके आधारवाक्य निर्वर्ष की सत्यता हेतु निश्चायक साक्ष्य प्रदान करते हैं। प्रत्येक निगमनात्मक अनुमान या तो वैध होता है या अवैध। यह वैध तब होता है जब बिना निर्वर्ष के सत्य हुए आधारवाक्यों का सत्य होना असम्भव हो, अन्यथा यह अवैध होता है।

यदि किसी वर्ग का प्रत्येक सदस्य दूसरे वर्ग का भी सदस्य है तो प्रथम वर्ग को द्वितीय में अन्तर्निहित या समाहित करेंगे। यदि किसी वर्ग के केवल कुछ सदस्य दूसरे के सदस्य हैं तो प्रथम को दूसरे में अंशतः समाहित करेंगे।

निरूपार्थिक तर्कवाक्य के चार विभिन्न मानक आकार हैं जो अधोलिखित चार-चार तर्कवाक्यों से प्रकट हैं:

1. राजनीति के सभी व्यक्ति असत्यवादी होते हैं
2. राजनीति का कोई भी व्यक्ति असत्यवादी नहीं होता है
3. राजनीति के कुछ व्यक्ति असत्यवादी होते हैं।
4. राजनीति के कुछ व्यक्ति असत्यवादी नहीं होते हैं।

प्रथम उदाहरण - सर्वव्यापी विधायक (Universal affirmative)
 द्वितीय उदाहरण - सर्वव्यापी निषेधात्मक (Universal negative)
 तीसरा उदाहरण - अंशव्यापी विधायक (Particular affirmative)
 चौथा उदाहरण - अंशव्यापी निषेधात्मक (Particular negative)

2.

गुण, परिमाण और वितरण (Quality, Quantity and Distribution) - प्रत्येक निरूपार्थिक तर्कवाक्य में 'गुण' और 'परिमाण'

दोनों होते हैं। तर्कवाक्य का गुण उसके द्वारा वर्णितभाव
 सम्बन्ध के विधि या निर्धार होने के अनुसार
 विद्यात्मक या निर्धेयात्मक हो सकता है। इस प्रकार
 सर्वज्ञापी विद्यात्मक और अज्ञेयज्ञापी निर्धेयात्मक
 विद्यात्मक दोनों ही तर्कवाक्य गुण में विद्यात्मक
 हैं। जब कि सर्वज्ञापी निर्धेयात्मक और अज्ञेय-
 ज्ञापी निर्धेयात्मक दोनों ही निर्धेयात्मक हैं।
 सर्वज्ञापी विद्यात्मक, सर्वज्ञापी निर्धेयात्मक,
 अज्ञेयज्ञापी निर्धेयात्मक और अज्ञेयज्ञापी
 निर्धेयात्मक के लिए क्रमशः A (आ) E (इ)
 I (ई) और O (ओ) अक्षरों के प्रयोग करने
 की परम्परा है। अंग्रेजी के प्रथम चार अक्षर लॉटि
 अल्फा (Alpha) और नीगो (Negot) से
 क्रमशः लिए गए हैं।

प्रत्येक अव्यय मात्रक आकार
 का निरुपाधिक तर्कवाक्य 'सभी' कोई नहीं या
 'कुछ' आदि से शुरू होता है। ये अल्प तर्कवाक्य
 के परिमाण इंगित करते हैं और परिमाणक
 (Quantifier) कहलाते हैं। प्रथम दो सूचित करते
 हैं कि तर्कवाक्य सर्वज्ञापी हैं और तीसरा
 सूचित करता है कि तर्कवाक्य अज्ञेयज्ञापी हैं।
 सर्वज्ञापी परिमाण प्रकट करने के अतिरिक्त 'कोई
 नहीं' परिमाणक तर्कवाक्य का निर्धेयात्मक गुण
 भी बताता है।

किसी मात्रक आकार के निरुपाधिक
 सामान्य ढाँचे में चार भाग होते
 हैं। प्रथम परिमाणक फिर उद्देश्य पद और
 तब संगीजक और अन्ततः विधीय पद। इस
 ढाँचे को अधोलिखित ढंग पर लिखा जा सकता

5. परिमाणक (उद्देश्य पद) संगीजक (विधीय पद)
 Quantifier (subject term) Copula (Predicate term)

व्याप्ति :- यदि तर्कवाक्य किसी पद द्वारा अभिहित की के सभी सदस्यों का निर्देश करता है तो वह पद उस तर्कवाक्य में व्याप्त होता है।

1. तर्कवाक्य का उद्देश्य पद उस तर्कवाक्य में (या उसके द्वारा) व्याप्त होता है जब कि इसका विधीय पद उसमें (या उसके द्वारा) अग्राप्त है।
2. 'E' (र) तर्कवाक्य अपने उद्देश्य और विधीय दोनों ही पदों को व्याप्त करता है।
3. 'I' दोनों ही उद्देश्य और विधीय पद किसी अंशग्रापी विध्यात्मक तर्कवाक्य में अग्राप्त होते हैं।
4. 'O' अंशग्रापी निषेधात्मक तर्कवाक्य अपने विधीय पद को व्याप्त करता है किन्तु अपने उद्देश्य पद को नहीं।

विध्यात्मक और निषेधात्मक दोनों ही प्रकार के सर्वग्रापी तर्कवाक्य अपने उद्देश्य पदों को व्याप्त करते हैं जबकि अंशग्रापी तर्कवाक्य चाहे वे विध्यात्मक हों या निषेधात्मक अपने उद्देश्य पदों को व्याप्त नहीं करते। इस प्रकार किसी मानक आकार के तर्कवाक्य का परिणाम यह निश्चित करता है कि इसका उद्देश्य पद व्याप्त या अग्राप्त है।

विध्यात्मक तर्कवाक्य चाहे वे सर्वग्रापी हों या अंश-ग्रापी, अपने विधीय पदों को व्याप्त नहीं करते, जबकि निषेधात्मक तर्कवाक्य, चाहे वे सर्वग्रापी हों या अंशग्रापी, अपने विधीय पद को अवश्य व्याप्त करते हैं। इस प्रकार किसी तर्कवाक्य में व्याप्ति के

का गुण यह तब करता है कि इसका वि
 पद व्याप्त है या अव्याप्त ।

उद्देश्य पद व्याप्त
 (Subject term distributed)

<p>आ, सभी उ वि है (A: ALL S is P.)</p>	<p>इ, कोई उ वि नहीं है (E: NO S is P.)</p>
<p>इ, कुछ उ वि है (I: Some S is P.)</p>	<p>उ, कुछ उ वि नहीं है (O: Some S is not P.)</p>

विशेष पद
 अव्याप्त
 (Predicate
 term
 undistrib-
 ted)

विशेष पद
 व्याप्त
 (Predic-
 +
 dist.)

उद्देश्य पद अव्याप्त
 (Subject term undistributed)

Dr. Saroj Ram
 Dept. of Philosophy
 D.K. College, Deemston